साहिब कौल

साहिब कौल मुगल शहंशाह जहांगीर के ज़माने के एक कवि थे। वह हब्बा कदल, श्रीनगर के रहने वाले थे। उन के जन्म के बारे में तो कुछ नहीं कहा जा सकता लेकिन कहते हैं कि उन की मृत्यु १६४२ ई॰ में हुई। साहिब कौल ने कश्मीरी ज़बान में कृष्ण अवतार पर कविताऐं और लीलाऐं लिखी थीं। कहा जाता है कि १८७५ ई॰ में यूरप के एक अन्वेषक श्री बुहलर कश्मीर आये थे और वह साहिब कौल की किताब कृष्ण अवतार की एक हस्तलिखित प्रति अपने साथ लेकर गये। अब न तो हमारे पास वह किताब उपलब्ध है और न ही उन की कोई कविता या लीला।

साहिब कौल के एक संबंधी पण्डित मधुसुधन, जो आरकाइवस डिपार्टमेंट, श्रीनगर में प्रबंधक रह चुके थे, से मालूम हुआ है कि किसी ने साहिब कौल से कहा कि कल्प वृक्ष पर कोई ऐसी कविता लिखें, जिस से आप का नाम भी कल्प वृक्ष की तरह ही मशहूर हो जाये। कहते हैं कि इस पर साहिब कौल ने सात ज़बानों में सात पदों की एक कविता लिख डाली। कविता तो बाद में नहीं मिली लेकिन उस की अंतिम पंक्ति यूं थी:

साहिब कौलु, हा मतवालु, पोशन मालु करुयो

———–